पेशवाओं की रणनीतिक महत्वाकाँक्षाएं एक अध्ययन

डॉ0 नीलम गौड, प्राचार्य., व्यापार मण्डल कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हनुमानगढ़।

प्रस्तावित शोध की भूमिका

मराठो के बढ़ते हुए प्रभुत्व ने मुगल साम्राज्य को जहां विनाश के गर्त में धकेला वहां एक लम्बे अर्से तक उन्होंने भारत में अपने प्रभुत्व का डंका भी बजाया। एस. आर. शर्मा का कथन अधिक समीचीन है इस सम्बन्ध में कि भारत में मुगलों की राजनीति सत्ता के उत्तराधिकारी वास्तव में अंग्रेज नहीं अपितु मराठे थे । विशेषकर अठारहवीं शताब्दी में पेशवाओं एवं उनके सहायक सरदारों का लगभग सम्पूर्ण भारत पर राजनीतिक प्रभुत्व छाया रहा और मुगल सम्राटों को वे अपने हाथ का खिलौना बनाए रखे रहो । इतिहासकारों के लिए यह प्रश्न विचारणीय रहा है कि क्या दक्षिण में मराठा शक्ति का अभ्युदय और उत्थान एक आकस्मिक घटना थी ग्रांट डफ ने मराठों के उदय और उत्कर्ष को सहयाद्रि पर्वत के वनों में एकाएक प्रगट होने वाली अग्निन की तरह बतलाया है परन्तु यह कथन भ्रम मूलक है ।

अब यह मत सुस्थापित है कि मराठों का अभ्युदय और उत्थान भारत के इतिहास की एक आश्चर्यजनक घटना तो है परन्तु यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। "यह मराठों का उत्कर्ष एक असम्बद्ध घटना नहीं है । शिवाजी मराठों का उत्कर्ष का एक प्रबल और प्रमुख कारण था । परन्तु यह उसका एक मात्र कारण नहीं था। निःसन्देह शिवाजी ने अपनी निर्भिकता साहस और विजयों से रेत के कणों जैसी विखरी मराठा जाति को संगठित करके उसे शक्तिशाली बनाया।

प्रस्तावित शोध के सोपान

वास्तव में मराठा शक्ति के उदय और विकास में महाराष्ट्र की विगत 500 वर्षों की राजनीतिक और आर्थिक दुर्व्यवस्था, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जागृति और व्यापक आन्दोलन रहे हैं। उनमें विगत पाच शताब्दियों का राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक इतिहास छिपा है परन्तु सबसे बड़ी बात यह है कि मराठों का उत्कर्ष और विकास जनता का था । जिसमें हिन्दू धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीयता की अदम्य भावनाएं थी। मराठों के अभ्युदय और उत्कर्ष का क्षेत्र तैयार करने का कार्य कुछ तो महाराष्ट्र की प्रकृति ने किया, कुछ इस प्रदेश के प्राचीन इतिहास में, और कुछ धार्मिक और सांस्कृतिक जागृत और आन्दोलन ने तथा उस शस्त्र विद्या की शिक्षा ने किया जिसे मराठों ने मुस्लिम शासन के दो सौ वर्षों में ग्रहण किया था।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

सर देसाई के कथनानुसार पश्चिमी घाट को इस दुर्जेय पर्वत माला ने ही मराठों को इस योग्य बनाया कि वे मुसलमान विजेताओं के विरूद्ध विद्रोह कर सके मुगलों की सुसंगठित शक्ति के सामने अपनी राष्ट्रीयता को पुनः प्रदर्शित कर सके और अपना साम्राज्य स्थापित कर सके महाराष्ट्र प्रदेश की प्राकृतिक स्थिति का मराठा स्वभाव पर प्रभाव का विश्लेषण करते हुए डा0 यदुनाथ सरकार ने लिखा है कि मराठों की स्वतन्त्रता प्रियता तथा पृथकता की मनोवृत्ति को प्रकृति से अत्यधिक सहायता मिली जिसके द्वारा उनको बने बनाए तथा संरक्षित गढ़ उपलब्ध हुए जहाँ वे तुरन्त भागकर शरण ले सकते थे तथा जहाँ से वे प्रबल प्रतिरोध कर सकते थे। उनके देश की जलवायु ने उनको फुर्तीला, प्रतिशोधी, उग्र तथा उत्तम सैनिक बना दिया। उनमें पर्वतीय जातियों के सभी गुण विद्यमान थे।

घने जंगलों, ढालू पहाड़ियों और दुर्गम गढ़ों ने उनमें वीरता के भाव भरे है। वे जन्मजात् घुड़सवार तथा साहसी होते हैं। ऐसी स्थिति में यदि उनमें स्वराज्य स्थापित करने का उत्साह जगा और सफलता पूर्वक मुगल शक्ति का प्रतिशोध किया तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अपितु यह एक स्वाभाविक तथा सामयिक घटना समझी जानी चाहिए।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

मुसलमानों की हिन्दू विरोधी नीति तथा अत्याचारों ने मराठों में प्रतिशोध की भावना जागृत की, और वे दक्षिण में संगठित होकर शिवाजी के नेतृत्व में स्वराज्य की स्थापना में जुट गये। सर देसाई का यह मत सही है कि "यदि वीजापुर के सुल्तान मुहम्मद आदिल शाह ने अपने पिता की सहिष्णुता की नीति का त्याग कर हिन्दू मन्दिरों को भ्रष्ट करने तथा अपहरण के पुराने तरीकों को न अपनाया होता तो सम्भव था कि शिवाणी स्वतन्त्र राष्ट्र की स्थापना का कार्य अपने हाथ में न लेते" औरंगजेब द्वारा अकबर की सहिष्णुता की नीति को त्यागकर हिन्दुओं के दमन की नीति अपनाए जाने के कारण मराठा आन्दोलन की आवश्यकता अनुभव की गई। फालन के बाबा निम्बालकर को बीजापुर हारा बलात् मुसलमान बनाए जाने से मराठे भड़क उठे।

शोध का निष्कर्ष

इस काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कालजयी घटना थी – दक्षिण भारत में मराठा शक्ति की स्थापना । निस्संदेह मुगल साम्राज्य के अवशेषों पर भारत अनेक राज्यों का प्रार्दुभाव हुआ जिनमें मराठा साम्राज्य सर्वाधिक शक्तिशाली एवं महत्वपूर्ण राज्य था। मराठों की शक्ति को सर्वप्रथम पहचाननें वाला व्यक्ति अहमदनगर का मलिक अम्बर था। उसने मुगलों के विरूद्ध युद्ध में मराठों को अपनी सेना में शामिल कर उनका उपयोग किया। मराठों को उमरावर्ग में शामिल करने का श्रेय शाहआलम जहांगीर को जाता है। जहांगीर काल में ही मराठो को पहचान मिली।

परन्तु शाहजहा के काल में मराठा एवं मुगलों के बीच सम्बन्ध खराब होकर संघर्ष प्रारम्भ हो गया। धीरे–धीरे औरंगजेब के शासक बनते ही मुगल –मराठा सम्बन्ध शत्रुता की चरम सीमा पर पंहुच गए। उसके बाद मराठे मुगलों के

कट्टर शत्रु सिद्ध हुए जिन्होने पतन की ओर अग्रसरित मुगल साम्राज्य के विखण्डन में अपना अमूल्य योग दिया। 18 वीं शताब्दी के मध्य तक मराठे भारत की एक महत्वपूर्ण शक्ति का प्रमुख केन्द्र बन गये। छत्रपति शिवाजी की बढती हुई शक्ति को देखकर मुगल बादशाह औरंगजेब ने शाइस्त खॉ को दक्षिण का सूबेदार बनाया और शिवाजी को समाप्त करने के लिए भेजा। शाइस्त खां शिवाजी की शक्ति का दमन ना कर सका। शिवाजी के बढ रहे प्रभाव से भयभीत होकर औरंगजेब ने आमेर नरेश जयसिंह को शिवाजी को दमन करने के लिए भेजा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सर यदुनाथ सरकार – शिवाजी और उनका युग
2. महादेव गोविन्द रानाडे – मराठों का उत्कर्ष
3. गोविन्द सखाराम सरदेसाई – मराठों का नवीन इतिहास खण्ड–1 एवं खण्ड–2
4. ग्रान्ट डफ – मराठों का इतिहास
5. डा. एस. सी. मिश्रा एवं प्रताप मिश्र – मराठों का इतिहास
6. बी० एन० लूनिया . मराठा प्रभुत्व, भाग–1 एवं भाग–2